लखनऊ जागरण

लखनऊ, 15 अक्टूबर 2014

मृदा स्वास्थ्य एवं उर्वरता में सुधार से बढ़ेगी उत्पादकता

जागरण संवाददाता, लखनऊ : दुनिया में हर जीव को आराम चाहिए लेकिन मृदा सतत रूप से अपनी उर्वरता फसल को देती रहती है। मृदा की खराब होती उर्वरा एवं स्वास्थ्य को गंभीरता से लेना चाहिए।

यह विचार भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान (आइआइएसआर) के निदेशक डॉ. सुशील सोलोमन ने मृदा उर्वरता एवं फसल उत्पादकता में वृद्धि हेतु समेकित पोषक प्रबंधन विषय पर आठ दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए व्यक्त किए। डॉ. सोलोमन ने कहा कि मृदा की उर्वरता में लगातार कमी हो रही है तथा मृदा में कार्बन की मात्रा कुछ क्षेत्रों में निम्न स्तर (0:25) तक पहुंच गई है जो गन्ना उत्पादन के साथ अन्य फसलों की उत्पादकता के लिए काफी चिंताजनक है। कृषकों को रासायनिक उर्वरकों के साथ कार्बनिक पदार्थ, जैविक खाद, हरी खाद, फसल अवशेषों को खेतों में प्रयोग करने के लिए जागरूक किया जाए।

आठ दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश कृषि विभाग, गन्ना विकास विभाग तथा कृषि विज्ञान केंद्रों के प्रशिक्षार्थी भाग ले रहे हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रम के समंवयक डॉ. सुधीर कुमार शुक्ला ने बताया कि प्रशिक्षण में समेकित पोषक प्रबंधन से संबधिंत सभी विषयों सहित गन्ना खेती में मशीनीकरण, बारानी खेती, वर्मी कंपोस्टिंग, कीट एवं रोगों का जैविक प्रबंधन, सूक्ष्म पोषक तत्व तथा कमी के लक्षण जैविक खेती की संभावनाएं एवं तकनीक पर चर्चा की जाएगी।

जनसंदेश टाइम्स

लखनऊ, बुधवार, 15 अक्टूबर 2014

उर्वरता सुधार बढ़ायेगा उत्पादन : डॉ. सोलोमन

लखनऊ। दुनिया में हर जीव को आराम चाहिए ,लेकिन मृदा बिना आराम किए सतत अपनी उर्वरा गुण फसल को प्रदान करते हुए उत्पादन में अहम योगदान देते रहती है। अब समय आ गया है कि हम मृदा की खराब होती उर्वरा एवं स्वास्थ्य पर गंभीर हों और इसमें सुधार के लिए संस्तुत तकनीक के प्रग्रहण को सुनिश्चित करें।

यह विचार मंगलवार को भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. सुशील सोलोमन ने मृदा उर्वरता एवं फसल उत्पादकता में वृद्धि हेतु समेकित पोषक प्रबन्धन विषय पर आठ दिवसीय आदर्श प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए व्यक्त किये। डा. सोलोमन ने कहा कि मृदा

प्रशिक्षण कार्यक्रम

आठ दिवसीय आदर्श प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरु, जैविक खादों के लिए किसानों को जागरुक किया जाए

की उर्वरता में लगातार कमी हो रही है और मृदा में कार्बन की मात्रा कुछ क्षेत्रों में निम्न स्तर 0.25 प्रतिशत तक पहुंच गयी है जो गन्ना उत्पादन के साथ अन्य फसलों कि उत्पादकता के लिए बिल्कुल निराशाजनक स्थिति है। आज आवश्यकता है कि कृषकों को रासायनिक उर्वरकों के साथ कार्बनिक पदार्थ, जैविक खाद, हरी खाद, फसल अवशेषों को खेतों में प्रयोग करने के लिए जागरूक किया जाए। शोध संस्थानों ने समेकित पोषक प्रबधंन तकनीक का विकास तो कर लिया है, लेकिन इन तकनीकों का कृषकों द्वारा भरपूर प्रयोग नहीं हो रहा है जिस कारण मृदा उर्वरता में लगातार कमी हो रही है तथा स्वास्थ्य भी चिंता जनक स्थिति में पहुंच गयी है। उन्होंने बताया कि राज्यों के कृषि विकास विभागों में कार्यरत अधिकारियों को सबसे पहले इन तकनीकों पर प्रशिक्षित कर उन्हे कृषकों के बीच तकनीकों को लोकप्रिय करने के लिए प्रेरित किया जाए। कार्यक्रम में कृषि विभाग, गन्ना विकास विभाग तथा कृषि विज्ञान केन्द्रों के प्रशिक्षणार्थी भाग ले रहे है। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रसार निदेशालय, कृषि एवं सहकारिता विभाग, कृषि मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित किया गया है। प्रशिक्षण कार्यक्रम के समन्वयक प्रधान वैज्ञानिक डॉ. सुधीर कुमार शुक्ला ने बताया कि इस प्रशिक्षण में समेकित पोषक प्रबधंन से सम्बधिंत सभी विषयों सहित गन्ना खेती में मशीनीकरण, बारानी खेती, वर्मी कम्पोस्टिंग, कीट एवं रोगों का जैविक प्रबधंन, सूक्ष्म पोषक तत्व तथा कमी के लक्षण जैविक खेती की संभावनाएं एवं तकनीक पर चर्चा की जाएगी।

भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में आठ दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के शुभारम्भ मौके पर कृषि अधिकारियों और वैज्ञानिकों को सम्बोधित करते संस्थान के निदेशक डॉ. सुशील सोलोमन

अमर उजाला

लखनऊ बुधवार 15 अक्तूबर 2014

खराब हो गई खेतों में मिट्टी की सेहत

मृदा स्वास्थ्य और पोषक प्रबंधन पर संगोष्ठी में उठा मुद्दा

लखनऊ (ब्यूरो)। खेतों में लगातार बढ़ रहे उर्वरकों की वजह से मिट्टी का स्वास्थ्य खराब हो चुका है। यह सबसे निचले स्तर पर पहुंच गया है। इसलिए जरूरी है कि इसकी सेहत सुधारने के प्रयास हों। इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ शुगरकेन रिसर्च (आईआईएसआर) में आयोजित संगोष्ठी और प्रशिक्षण कार्यक्रम में मिट्टी की खराब होती सेहत का मुद्दा निदेशक डॉ. सुशील सोलोमन ने मंगलवार को उठाया।

उन्होंने कहा, मृदा की उर्वरता में लगातार कमी हो रही है। इसमें कार्बन की मात्रा कुछ क्षेत्रों में निम्न स्तर 0.25 यूनिट तक पहुंच गई है। गन्ना व अन्य फसलों की उपज के लिए बिल्कुल निराशाजनक स्थिति है। आज आवश्यकता है कि किसानों को रासायनिक उर्वरकों के साथ कार्बनिक पदार्थ, जैविक खाद, हरी खाद व फ सल अवशेषों को खेतों में प्रयोग करने के लिए जागरूक किया जाए। शोध संस्थानों ने समेकित पोषक प्रबधंन तकनीक का विकास तो कर लिया है, परन्तु किसान इन तकनीकों का भरपूर इस्तेमाल नहीं कर पा रहे हैं।

राष्ट्रीय
सहारा

लखनऊ। बुधवार • 15 अक्टूबर • 2014

फसल उत्पादकता का प्रशिक्षण शुरू

सरोजनीनगर-लखनऊ। रायबरेली रोड स्थित भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के निदेशक डा. सुशील सोलोमन ने मंगलवार को मृदा उर्वरता एवं फसल उत्पादकता में वृद्धि के लिए समेकित पोषक प्रबन्धन विषय पर आयोजित आदर्श प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारम्भ किया।

the pioneer

LUCKNOW | WEDNESDAY | OCTOBER 15, 2014

'Soil health management a must to improve yield'

PIONEER NEWS SERVICE ■ LUCKNOW

Every living organism in the world takes rest for a while at a certain interval but it is the soil which never sleeps and continuously provides all the essential nutrients to the crops for their growth and development. Now the soil health and fertility is facing a crisis and urgent intervention is needed to address it otherwise it will be too late to protect and sustain productivity of crops.

These views were expressed by Dr S Solomon, Director, Indian Institute of Sugarcane Research, Lucknow, while inaugurating a model training course on 'Integrated Nutrient Management' for improving soil fertility and crop productivity in the Institute.

He said that there was a continuous degradation in soil health and fertility level and in some pockets organic carbon (responsible for soil health) had decreased to an alarming level of 0.25 per cent, which was a matter of great concern for all of us.

"Immediate attention is needed to lower the dose of chemical fertilisers and the farmers should be educated about the application of organic matter, biofertilisers, green manure and crop residues along with inorganic fertilisers. Research institutes like the IISR have developed techniques of integrated nutrient management but they are least adopted by the farmers in their fields and as a result unscrupulous use of inorganic fertilisers leads to infertility of soil and its health reached a level which is alarming and where it needed intensive care. Training of officials is therefore necessary," said the scientists at the IISR.

In this context an eight-day-long model training course sponsored by the Department of Agriculture and Cooperation, Ministry of Agriculture, Government of India, is being organised at the IISR (October 13-20, 2014). In this training the officials of the Agriculture and Cane Departments, Government of UP, and the Krishi Vigyan Kendras are participating.

According to the Course Director, Dr SK Shukla, the participating officials would be imparted practical knowledge and information on all aspects of soil health and fertility management and know-how in mechanised cane cultivation, vermi composting, bio control of sugarcane diseases and pests, micro nutrients and their deficiency symptoms. Besides, organic cane farming would be provided, he said. The media incharge and Principal Scientist, Dr AK Sah, informed newspersons that the Institute was implementing an intensive programme on making soil health cards in each sugar mill zone of UP through the scientific soil test being done at the IISR lab after collecting samples from each mill zone.

"Different outreach programmes, including a regular training of sugar mill personnel is being organised by the Institute to transfer valuable information on soil health and fertility management. The IISR is also emphasising on the use of modern IT tools to propagate information on the latest cane cultivation techniques among the farmers and development officials," said Sah.

On Tuesday a group of 45 BTech (Biotechnology) final year students from the Amity University, Lucknow, visited the IISR and they were educated about the latest biotechnological tools applied in the cane improvement programme.